दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Program Mains-2023

निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: Ravi Gangwar

Mobile Number: ______

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number: ______

Center & Date: Mukherjee Nagar, 17.07.23

UPSC Roll No. (If allotted): 0806397

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A	1 — 2 —	51 55
सकल योग (Grand Total)		106

R

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

- निबंध में समय की कमी नहीं होती है, इसलिए आयामों पर विचार करें व अधिकतम आयामों को शामिल करें।
प्रवाह निबंध को दिशा प्रदान करता है, इसलिए संयोगी शब्दों के माध्यम से पैराग्राफ बदलें।

- उदाहरणों का प्रयोग अपेक्षित है।
- रोचकता निबंध को पाठक से जोड़े रखती है।
- प्रयास करते रहें।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

"सूचना लोकतंत्र की मुद्रा है"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बात उस समय की है जब सम्पूर्ण विश्व में फ्रांसीसी क्रान्ति के मूल्य स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व का प्रचार - प्रसार हो रहा था। तमाम यूरोपीय राष्ट्रों में राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित होकर एकीकरण के प्रयास चल रहे थे। इसी क्रम में जब जर्मनी के एकीकरण के प्रयासों में फ्रांस की साम्राज्यवादी उपस्थिति बाधक बनी तब जर्मनी के लौह पुरुष बिस्मार्क ने सूचना रूपी मुद्रा का ऐसा कूटनीतिक इस्तेमाल किया कि प्रशा व फ्रांस में जंग छिड़ गयी और फ्रांस की हार के साथ ही न केवल जर्मनी का एकीकरण हुआ,

भूमिका विषय से प्रत्यक्ष जुड़ती हुई तथा रोचक होनी चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बल्कि वर्साय के शीशमहल में जर्मन सम्राट का राज्याभिषेक किया गया, शायद तभी कहा भी गया कि 'जर्मन साम्राज्य की जन्मभूमि ही इसकी अंतिम संस्कार की जगह बनी'।

वस्तुतः हुआ यूँ था कि बिस्मार्क ने अपने दूत को फ्रांस के राजा से मिलने भेजा था किन्तु वहाँ जो कुछ भी घटित हुआ उसे अपने कूटनीतिक कौशल से पुनर्गठित कर फ्रांस & प्रशा में प्रसारित करा दिया। प्रकाशित ~~समाच~~ समाचार से जर्मनी में ऐसा प्रतीत हुआ कि फ्रांस ने जर्मनी का अपमान किया, वहीं फ्रांस में लगा कि जर्मनी ने फ्रांसीसी सम्राट & राष्ट्रवाद को आहत किया। फलतः दोनों देशों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में तनाव बढ़ा और विश्व ने सूचना रूपी मुद्रा के प्रयोग के द्वारा जर्मन साम्राज्य का उद्‌भव देखा।

अब मगर आधुनिक सन्दर्भ में देखें या वर्तमान के सन्दर्भ में कि सूचना का प्रयोग लोकतंत्र में किस प्रकार किया जाता है तो उससे पहले लोकतंत्र के सिद्धान्तों पर नजर डालना उचित होगा।

वास्तव में लोकतंत्र में लोगों की इच्छा ही सबकुछ होती है। इसी से राज्यों का निर्माण होता है (राष्ट्रवादी भावना), इसी से राज्यों का विनाश भी होता है (अलगाववादी भावना) तो लोकतंत्र की शक्ति का आधार ही ये लोक अर्थात जन होते हैं। इस प्रकार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लोकतंत्र की मुद्रा से क्या तात्पर्य है। इसे लिखिए एवं सूचना इस दिशा में प्रभावी कैसे-

लोकतंत्र 'जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा' शासन होता है। किंतु जब जनता के द्वारा चुने गये प्रतिनिधि जनता के लिए शासन न कर, जनता के ऊपर शासन करते हैं, उनका शोषण करते हैं, तब उनका मुकाबला करने के लिए सूचना (information) रूपी मुद्रा काम आती है।

भारतीय लोकतंत्र की स्थिति पर अदम गोंडवी साहब की ये पंक्तियाँ एकदम सत्यता प्रकट करती हैं कि

"काजू भुने प्लेट में, व्हिस्की भरी ग्लास में।
उतरा है रामराज विधायक निवास में ॥

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा प्रदर्शित राजनीति के स्याह चरित्र से लड़ने के लिए यह सूचना रूपी मुद्रा काफी लाभदायक सिद्ध हुयी है। वस्तुतः भारतीय लोकतंत्र में इसकी संवैधानिक गारंटी अनु॰-19 के तहत भी दी गयी है तथा साथ में ही सूचना का अधिकार अधि॰, 2005 द्वारा इसके विधिक पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है।

यह सूचना के अधिकार का ही प्रतिफल है कि आज हम जानते हैं कि भारतीय राजनीति में आधे से ज्यादा प्रतिनिधि या तो भ्रष्टाचार में लिप्त हैं या किसी गंभीर अपराध में।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

या फिर हम यह जान पाते हैं कि सरकार द्वारा जो खर्चा जिस मद में बताया जा रहा है वह उसी में किया गया है अथवा नहीं। इसी प्रकार विभिन्न सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों आदि की प्रतिफलता कितनी रही है? या फिर भारतीय मुद्रा (रुपये) का प्रयोग किस प्रकार उपयोगी साबित हुआ।

उदाहरणों का प्रयोग करें।

वास्तव में सूचना" लोकतंत्र के सम्बन्ध में उस मुद्रा का कार्य करती है, जिसकी अनुपस्थिति का फायदा उठाकर जनप्रतिनिधि मौद्रिक मुद्रा का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

गलत इस्तेमाल करते थे, लोकतंत्र को भ्रष्टतंत्र बनाने में लगे हुए थे। ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल की भ्रष्टाचार संबंधी रिपोर्ट से यह बात साबित भी हो जाती है।

अब मगर यह बात करें कि सूचना रूपी मुद्रा लोकतंत्र में यदि न होगी तो क्या होगा? इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि मौर्यों के बाद के काल को इतिहासकार कभी-कभी अन्धकार युग की भी संज्ञा देते हैं जिसकी मुख्य वजह उस काल से सम्बन्धित सूचनाओं का अभाव है। इसी तरह अगर लोकतंत्र में सूचनाओं का प्रवाह सुचारु

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(Please do not write anything except the question number in this space)

रूप से नहीं होगा तो समाज में अविश्वास का माहौल बनेगा, तनाव बढ़ेगा और लोकतंत्र के स्थायित्व पर भी खतरा बढ़ने लगेगा। जैसे कि जब सोवियत रूस जैसी तानाशाही सरकारों का पतन आर्थिक, सामाजिक, सूचनाओं के प्रवाह की वजह से हो सकता है तो भारत जैसे विविधता युक्त देश में ~~असली~~ सूचना रूपी मुद्रा की कीमत असली मुद्रा जितनी हो जाती है।

किसी विचारक ने ठीक ही कहा है कि व्यक्ति तब विद्रोह नहीं करता जब वह गरीबी में जी रहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

होता है, बल्कि उसका विद्रोह मुखर तब होता है जब उसे ~~अ~~ इसका आभास कराया जाता है। वरना फ्रांस में लोग अपमानित तथा शोषणयुक्त जीवन ~~जी~~ काफी समय से जी रहे थे लेकिन कसो ने जब तक उन्हें उनकी बेड़ियों की सूचना नहीं दी तब तक फ्रांस में क्रान्ति का सूत्रपात नहीं हुआ था। अतः हम देख सकते हैं कि सूचना का महत्व व्यक्ति के लिए बहुत होता है। उसे पता होना चाहिए कि उसकी सरकार उसके लिए क्या कर रही है? कहाँ खर्च कर रही है? क्यों खर्च कर रही है या फिर कब खर्च कर रही है?

पैराग्राफ छोटे लिखें। प्रत्येक पृष्ठ में 1 से 2 पैराग्राफ मात्र।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

question number in this space)

Discuss.

इसी क्रम में अगर देखा जाये तो सूचना आज के वैज्ञानिक-तकनीकी युग में लोकतंत्र के आर्थिक आयाम के लिए सच में मुद्रा का कार्य करती है। आज हम सूचना का क्रय-विक्रय कर मुद्रा अर्जित कर सकते हैं तो कई बार वस्तु विनिमय की तरह सूचना की माँग ही प्रमुख होती है न कि किसी धातु की मुद्रा की। ये सूचना, आँकड़े, आदि वर्तमान पीढ़ी का पूरा खाका खींच सकते हैं। विभिन्न सोशल मीडिया विपणन प्लेटफार्मस, मनोरंजन मंच,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि पर व्यक्ति की सारी सूचना एकत्र की जाती है और उसको न केवल मुद्रा के बदले में बेचा जाता है, बल्कि इसका प्रयोग व्यक्ति को भ्रमित (manupulate) करने के लिए भी किया जाता है। इस सन्दर्भ में अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव में कैंब्रिज एनालिटिका द्वारा किये गया कार्य से इसे समझा जा सकता है कि कैसे इनको पता होता है कि आप किस रेस्टोरेन्ट में खाना पसन्द करेंगें या घूमने के लिए कहाँ जाना पसन्द करेंगें या फिर आपकी संगीत की पसन्द क्या होगी या कुछ और? सबकी प्रोफाइलिंग करने के लिए

सूचना के विभिन्न आयामों को लिखें -
1. निर्धारण
2. चयन
3. निष्कासन
4. प्रमाण
इत्यादि भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उनके पास आँकड़ें (सूचना) मौजूद हैं। इसीलिए कहा भी गया है कि "data is the new oil". वस्तुतः आगे आने वाले समय में जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बोलबाला होगा वहाँ भी तो सूचना के द्वारा ही दुनिया में सबकुछ संचालित होगा।

यही नहीं न केवल आर्थिक तौर पर बल्कि राजनीतिक तौर पर भी विभिन्न राजनीतिक दल सूचनाओं का इस्तेमाल लोकतंत्र के विरुद्ध या उसके पक्ष में करते हैं। जैसे कि निर्वाचन क्षेत्र संबंधी आँकड़ों के आधार पर टिकट का वितरण हो या फिर

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सरकार द्वारा लोगों के सामाजिक, आर्थिक स्थिति संबंधी सूचना को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ लागू करना या फिर विभिन्न दलों द्वारा धार्मिक आधार पर बहुसंख्यकवाद का समर्थन हो या ~~धर्म~~ जाति आधारित विभिन्न दलों का निर्माण। उपर्युक्त सभी उदाहरणों में सूचना (आँकड़े, डाटा) की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाता है।

अतः हम देख सकते हैं कि सूचना न केवल वर्तमान में अपितु ऐतिहासिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण थी बल्कि इसका योगदान आने वाले दिनों में भी बढ़ता जायेगा। न केवल लोकतंत्र की मुद्रा के रूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

anything except the question number in this space)

में बल्कि लोगों को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक बनाने में, सरकार में पारदर्शिता सुनिश्चित करने में, लोकतंत्र में स्थायित्व सुनिश्चित करने में, विधायिका, कार्यपालिका पर नियंत्रण स्थापित करने में। इनमें अभी भी सूचना का उपयोग किया जा रहा है और आगे भी किया जायेगा।

निष्कर्ष रूप में यह कहना उचित होगा कि भविष्य उसी लोकतंत्र का है जिसने सूचना रूपी मुद्रा का इस्तेमाल इसके बहुआयामी स्वरूप के अनुरूप उचित तरीके से

निष्कर्ष पाठक की जिज्ञासा को समाप्त करने वाला होना चाहिए न कि नए प्रश्न पैदा करने वाला।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

this space)

किया। वरना न केवल लोकतंत्र के बारे में अपितु ~~एक~~ ~~व्यक्ति~~ व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में यह उक्ति कि "अंधा वह नहीं होता है जिसके आँखें नहीं होती बल्कि वह होता है जिसे कुछ मालूम नहीं" एकदम सटीक प्रतीत होती है और शायद ~~यही~~ इसलिए ही मेरा मित्र दृष्टिहीन होकर भी सिविल सेवा में चयनित हो गया और कुछ ओसामा जैसे ~~लोग~~ लोग आँखें होकर भी धर्मान्ध होकर आतंकवादी बन गये क्योंकि उन्हें धर्म संबंधी सही सूचना ही नहीं मिली थी।

51

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"जितना अधिक, हम अन्वेषण करते हैं, उतना ही अधिक हमें पता चलता है कि कितना अधिक अन्वेषण करना बाकी है।"

बात उस समय की है जब प्राचीन समय के महानतम विचारकों में से एक 'अरस्तु' अपनी शिक्षाएँ तत्कालीन समय के शासक-पुत्रों को दिया करते थे। उस दौरान वहाँ राजा फिलिप का बेटा भी आता था। जिसने अरस्तु से ये जाना कि विश्व का पश्चिमी कोना तो भूमध्य सागर के साथ जैसे देशों तक है उसके बाद केवल समुद्र है जबकि पूर्वी कोने के बारे में उसने अरस्तु से बस कुछ कहानियाँ ही सुनी थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहते हैं बस इसी पूर्वी छोर की प्राप्ति के लिए उसने विश्व-विजय का लक्ष्य निर्धारित किया और ग्रीस, एशिया माइनर, पश्चिमोत्तर भारत आदि जीतने के बाद जब 13 साल बाद वह वापस लौटा तो उसे पता चला कि अभी व्यास के पूर्व में नंद साम्राज्य, उसके पूर्व में इन्डो-चाइना क्षेत्र और उसके पूर्व में भी साम्राज्य विद्यमान थे।

उपर्युक्त वृत्तान्त से यह स्पष्ट होता है कि जब तक हम अपनी सीमाओं से बाहर नहीं निकलते तब तक हमें मालूम नहीं चलता कि वास्तव में किसी भी चीज की कोई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सीमा नहीं है और इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है कि 'सबकुछ जानने का दावा करने वाला वास्तव में कुछ नहीं जानता'। वास्तविकता भी यही है कि हम बस किसी चीज के कुछ पहलुओं को ही जान पाते हैं। कई बार हमारी मानसिक क्षमता आड़े आ जाती है तो कई बार वित्तीय संसाधन या समय की कमी होती है। इसीलिए संसार के सबसे विवादित तथ्य "भगवान है क्या" पर किसी ने लिखा है कि

"सऊर ही नहीं उन्हें खुदा को जानने का जो कहते हैं कि गर खुदा है तो नजर आना चाहिए"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार यह हमारी मानसिक क्षमता की कमजोरी का प्रमाण ही तो है कि हम बहुत पहले पृथ्वी को ब्रह्माण्ड का केन्द्र मानते थे और जो भी इसकी मुखालफत करता था, मध्यकालीन समाज ने उसको जिंदा तक जलाया है। वहीं आज नासा, इसरो आदि एजेंसियों के द्वारा यह साबित हो चुका है कि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हमारी हैसियत न के बराबर है।

इसी क्रम में अगर बात की जाये तो अगर किसी ने कुछ खोज या निर्माण किया है तो उसका भी यह कहना होता है कि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Good

" ज्ञान का मोती पाने के लिए सोच के गहरे सागर में डूबना ही पड़ता है।"

अर्थात जब तक हम अपने विचारों के स्तर को गहरा नहीं बनायेंगे तबतक हमारी स्थिति थोथा चना, बाजे घना जैसी ही रहेगी। और ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि जब तक हम किसी का एक पक्ष जानते हैं तो हमें बस उसके बारे में ही पता होता है और हम यही सोचते रहते हैं कि संसार का केन्द्र यह पृथ्वी है किन्तु बाद में पता चलता है कि हम तो उन अन्धों के समान हैं जिन्होंने हाथी को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श कर अपनी बुद्धि के हिसाब से परिभाषित कर कभी झाड़ू, कभी खड़ी दीवार, कभी अजगर जैसा बताया था।

अगर वर्तमान में भी हम इस तरह अन्वेषण करना रोक कर अर्जित उपलब्धि को अंतिम मान लेते हैं तो भविष्य में होने वाले सारे विकास अधूरे रह जायेंगे। जैसे कि क्या पता सच में कभी समय यात्रा संभव हो जाये या फिर अन्य ब्रह्माण्डों की खोज हो जाये या फिर टेलीपोर्ट के जरिये वास्तव में बात कर सके मनुष्य आदि। आविष्कार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आज की उपलब्धियाँ भी तो किसी समय में कल्पना ही थी और उन्हें निरन्तर खोज करने की प्रवृत्ति के चलते ही संच बनाया जा सका है। इसी सन्दर्भ में एडीसन का यह कथन कि " मैं 10,000 बार बल्ब बनाने में असफल नहीं हुआ बल्कि मैंने तो 10,000 तरीकों से बल्ब न बना सकने के तरीकों की खोज की है।"

इसी तरह अगर खोजकारी प्रवृत्ति इस दिष्ट धारा बल्ब के खोज पर रुकी रहती तो कैसे पता चलता कि प्रत्यावर्ती धारा भी विद्युत का एक प्रकार बन सकती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आज भी हम निरन्तर प्रगति करते जा रहे है और निरन्तर ही आभास होता जा रहा है कि पहले जितना भी पता था या अब जो भी पता चल रहा है वह कुछ भी नहीं है, इससे बहुत अधिक खोजा जाना बाकी है। इस सन्दर्भ में जैन धर्म का सप्तभंगीनय का सिद्धांत ज्ञान की सापेक्षता को अच्छे से प्रकट करता है और बाद में हम इस सिद्धान्त को आइन्स्टीन के सापेक्षतावाद के सिद्धान्त में भी अलग प्रसंग में देखते है।

वस्तुतः पश्चिमी दार्शनिक हीगेल का सिद्धान्त कि सत्य, असत्य

उदाहरणों के लिए में कविताओं तथा उदाहरणों का प्रयोग करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की टकराहट से ~~[illegible]~~ एक नये सत्य का जन्म होता है जो परम सत्य के करीब होता है किन्तु परम सत्य नहीं और ये नया उद्घाटित सत्य फिर किसी विरोधी विचार (भिन्न) से टकराकर, संश्लेषण की प्रक्रिया से गुजरकर परम सत्य के करीब पहुँचता रहता है। यही तो मूल मर्म है कि जितना हम खोजें उतना ही नया ज्ञान मिलेगा, उतने ही नये आविष्कार होंगे, उतने ही तरीके हम यह जानने के मिलेंगे कि हम अभी भी बहुत कुछ नहीं जानते।

जैसे ~~[illegible]~~ कि कुछ वर्ष पहले तक कण की निम्नतम आकार सीमा के बारे में अणु को अभाज्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

माना जाता था, फिर खोजे हुए और परमाणु को नई सीमा माना जाने लगा लेकिन विश्वयुद्ध (द्वितीय) के दौरान जर्मन वैज्ञानिकों ने इसका विभाजन भी सम्भव कर बताया कि इसमें भी इलैक्ट्रान, प्रोटान, न्यूट्रान पाये जाते हैं। क्या पता कल कोई नई खोज हो जाये और उपर्युक्त वर्णित मानदंड फिर अधूरे साबित हो जायें।

इस प्रकार हम जहाँ रहते हैं, हम जो सोचते हैं, सब असीमित है, ये तो हम ही हैं जिसने खुद को दायरों में बांध रखा है और ज्ञानेन्द्रिय जनित ज्ञान को ही अंतिम मान लेते हैं क्या पता अभी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संसार में क्या-क्या खोजा जाना बाकी हो। इस सन्दर्भ में यह उक्ति कि

"कोई भी लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं,
हारा वही जो लड़ा नहीं।"

मनुष्य की अन्वेषण प्रवृत्ति, खोजी प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है कि अभी तक हमने जितने भी खोजें की है इनमें कुछ नकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न कर रहीं है। फिर चाहे वह पर्यावरणीय स्तर पर हो, वैश्विक तापन हो, आपदा हो, महामारी हो आदि। इन सभी के मुकाबले हेतु और अन्वेषण की जरूरत है और न केवल पर्यावरण हितैषी बल्कि

आयामों पर विचार के साथ-2 इसके क्रम पर भी विचार करें। विज्ञान से जुड़े विचार एक आईह और इतिहास एक अर्थ जोड़ें। इसमे गड्डमड्ड न हो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अधिक स्थायी, संधारणीय तकनीकों की खोज करनी होगी ताकि हम अपनी आगे आने वाली पीढ़ी के अन्वेषण करने के मौकों को ही न खत्म कर दें। वस्तुतः जब सबकुछ प्रदूषित होकर नष्ट हो जायेगा तो आगे आने वाली पीढ़ी क्या अन्वेषित करेगी और सबसे जरूरी उनकी विकासात्मक प्रक्रिया भी रुक जायेगी। ध्यान देने योग्य है कि अस्तित्व उन्हीं का विद्यमान रहा है जिन्होंने अन्वेषण कर खोजें करना जारी रखा वरना डायनासोर जैसी प्रजाति विलुप्त हो गयी, मौर्य साम्राज्य, रोमन साम्राज्य, ओटो-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

-मन साम्राज्य जैसी शक्तिशाली राजनीतिक अभिव्यक्तियाँ आज समाप्त हो गयी तो इस मानव सभ्यता का पतन क्षणिक घटना साबित होने में वक्त नहीं लगेगा।

अन्ततः यह कहना कि यह अन्वेषण ही है जिसने सृष्टि को चलायमान बनाये रखा है, अतिशयोक्ति नहीं होगा, क्योंकि अन्वेषण ही बदलाव लाता है और यह "बदलाव ही प्रकृति का एकमात्र आधारभूत शाश्वत नियम है। हालांकि कई बार अन्वेषण हानिकारक भी साबित होता है जैसे कोरोना वायरस, एन्थ्रेक्स वायरस, विभिन्न आधुनिक हथियार प्रणालियाँ (परमाणु बम आदि)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

anything except the question number in this space)

लेकिन यहाँ यह ध्यान रखना जरूरी है कि कोई भी सिक्का एकपक्षीय नहीं होता है ये तो हमेशा हमारे ऊपर निर्भर करेगा कि हम उसके किस पक्ष से क्या और कितना ग्रहण करना चाहते हैं?

निष्कर्ष रूप में यह बात अपने आप स्थापित हो जाती है कि अन्वेषण करते हुए अपनी अज्ञानता की सीमा को लाँघना जरूरी है तभी हमें अपनी नई अज्ञानताओं का बोध होगा और फिर उनको जानने के लिए नवीन विकास प्रक्रिया का निर्माण

निष्कर्ष 100-120 शब्द में लिखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(this space)

प्रयास ठीक है।

55

होगा और इस प्रकार मानव विकास की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहेगी और समूची सृष्टि इससे लाभान्वित होती रहेगी। अन्त में अन्वेषी प्रवृत्ति को समर्पित ये पंक्तियाँ सार्थक प्रतीत होती हैं :-

'मंजिल मिलेगी, भटक कर ही सही।
गुमराह तो वो हैं, जो घर से निकले ही नहीं'॥

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation